AD EDUXIAN JOURNAL
A Quarterly Multidisciplinary Blind Peer Reviewed & Refereed Online International Journal
Google Scholar Indexing IF: 1.024
Vol (2), Issue (1), Feb-May 2025 ISSN: 3048-9751

समावेशी शिक्षा के लिए मालवीय जी का दृष्टिकोण

नमिता वर्मा[1] और डॉ० मणि जोशी[2]

Review:08/03/2025 **Acceptance:25/04/2025** **Publication: 15/05/2025**

सारांश:

समावेशी शिक्षा से तात्पर्य- सभी के लिए शिक्षा सुनिश्चित करना। अर्थात् कोई भी छात्रचाहें वह शारीरिक रूप से, मानसिक रूप से,सामाजिक रूप से एवं संवेगात्मक रूप से विशिष्टता रखते हुए सामान्य छात्रों के साथ में एक ही कक्षा में शिक्षा ग्रहण करना 'समावेशी शिक्षा' के अंतर्गत आता है। समावेशी शिक्षा के संदर्भ में पंडित मदन मोहन मालवीय जी के विचार इसकी वर्तमान में प्रासंगिकता को दर्शाते हैं। पंडित मदन मोहन मालवीय एक शिक्षाविद, महान समाज सुधारक, दार्शनिक, राजनीतिक एवं स्वतंत्रता सेनानी आदि विभिन्न रूपों में अपना योगदान दिया है। जिसमें शिक्षा के संदर्भ मालवीय जी के द्वारा किए गए कार्य शिक्षा जगत में अतुलनीय हैं। मालवीय जी ने छात्रों में मूल्य शिक्षा एवं चरित्र निर्माण पर विशेष बल देते हुए सर्वांगीण विकास की बात की है। सभी के लिए शिक्षा की आवश्यकता को अनिवार्य रूप से प्रत्येक छात्र तक उसकी पहुंच सुनिश्चित करना, उनका एक प्रमुख लक्ष्य था। मालवीय जी का शिक्षा दर्शन शिक्षा के प्रत्येक पहलू को स्पष्ट करता है, जैसे शिक्षा के विभिन्न स्तर (प्राथमिक से उच्च स्तर), शिक्षा के उद्देश्य पाठ्यक्रम, शिक्षण विधि, शिक्षक की भूमिका आदि के संदर्भ में अपने अमूल्य शैक्षिक विचार दिए हैं। किसी भी छात्र के साथ चाहे वह जाति, लिंग, पंथ आदि किसी भी आधार पर भेदभाव ना हो सके और सभी को शिक्षक प्राप्त हो सके। इसके लिए उन्होंने समावेशी शिक्षा की बात की है। इसी संदर्भ में नई शिक्षा नीति-2020 में भी समावेशी शिक्षा पर विशेष बल दिया गया है प्रत्येक विद्यार्थी की उत्कृष्ट क्षमताओं को पहचानने और उन्हें बढ़ावा देने के लिए शिक्षकों और अभिभावकों को संवेदनशील बनाया जाएगा। शिक्षा को समवर्ती सूची का विषय मानते हुए सभी पाठ्यक्रम, शिक्षणशास्त्र और नीतियों में विविधता व स्थानीय संदर्भ के लिए सम्मान। सभी शैक्षणिक निर्णयों में पूर्ण समानता और समावेश पर फोकस ताकि शिक्षा प्रणाली में सभी छात्रों का विकास सुनिश्चित हो। शिक्षा को अनुसूचित जातियों के बच्चों तक पहुंचना, उनकी भागीदारी बढ़ाना और सीखने के अंतराल को कम करना और अन्य पिछड़ा वर्ग पर विशेष ध्यान केंद्रित करना। आदिवासी समुदायों के बच्चों को लाभान्वित करने के लिए विशेष तंत्र की शुरुआत की जाएगी। शैक्षिक रूप से अविकसित समुदायों से संबंधित बच्चों की शिक्षा को बढ़ावा दिया जाएगा। दिव्यांग बच्चों को भी अन्य बच्चों की तरह गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त करने के समान अवसर प्रदान करने हेतु सक्षम तंत्र बनाया जाएगा। शिक्षा को अनुसूचित जातियों के बच्चों तक पहुंचना,उनकी भागीदारी बढ़ाना और सीखने के अंतराल को कम करना और अन्य पिछड़ा वर्ग पर विशेष ध्यान केंद्रित करना। आदिवासी समुदायों के बच्चों को लाभान्वित करने के

[1] नमिता वर्मा, शोध छात्रा, जे०आर०एफ०, शिक्षा विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ, उत्तर प्रदेश, भारत, ईमेल: namitaverma110@gmail.com, मोबाइल: **8429395581**

[2] डॉ० मणि जोशी, सह आचार्य, जे०एन०एम०पी० कॉलेज, लखनऊ, ईमेल: manijoshi9@yahoo.in मोबाइल: **7607820599**

लिए विशेष तंत्र की शुरुआत की जाएगी। शैक्षिक रूप से अविकसित समुदायों से संबंधित बच्चों की शिक्षा को बढ़ावा दिया जाएगा। दिव्यांग बच्चों को भी अन्य बच्चों की तरह गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त करने के समान अवसर प्रदान करने हेतु सक्षम तंत्र बनाया जाएगा। सामाजिक व आर्थिक तौर पर पिछड़े वर्ग (एस०ई०डी०जी०) के अधिक आबादी वाले क्षेत्रों में विशेष शिक्षा केदो का निर्माण किया जाएगा। बच्चों के शैक्षिक परिदृश्य को बदलने हेतु शिक्षा तंत्र की सभी योजनाओं व नीतियों का पूर्ण प्रयोग किया जाएगा। साथ ही साथ अनेक सुझाव भी दिए गए हैं। अतः स्पष्ट है कि पंडित मदन मोहन मालवीय जी का शैक्षिक दर्शनऔर भारत की शिक्षा पर इसका स्थायी प्रभाव, विशेष रूप से राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी)2020 के संदर्भ में परिदृश्य होती है।

मुख्यशब्द- *समावेशी शिक्षा, मालवीय जी का शैक्षिक दर्शन, सभी के लिए पहुंच, सर्वांगीण विकास, नई शिक्षा नीति-2020*

<u>प्रस्तावना</u>- पंडित मदन मोहन मालवीय महान शिक्षाविद, दार्शनिक, समाज सुधारक, कुशल राजनीतिज्ञ एवं महान स्वतंत्रता सेनानी थे। इनका जन्म 25 **दिसम्बर 1861** में इलाहाबाद (प्रयागराज) में हुआ था। अपनी प्रारंभिक शिक्षा इलाहाबाद से ही ग्रहण किया। इसके पश्चात् उच्च शिक्षा कलकत्ता विश्वविद्यालय (कोलकाता विश्वविद्यालय) से ग्रहण की। 'महामना' के नाम से महात्मा गांधी ने संबोधित किया। मालवीय जी ने 'बनारस हिंदू विश्वविद्यालय' (बीएचयू) की स्थापना 1916 में वाराणसी में की थी। जो वर्तमान में शिक्षा जगत में अपना महत्वपूर्ण स्थान रखता है। मालवीय जी के द्वारा स्थापित यह विश्वविद्यालय उस समय एशिया में एक वृहत विश्वविद्यालय के रूप में जाना जाता था। जिसमें उस समय 40,000 से अधिक विद्यार्थी जो आर्ट्स, वाणिज्य, विज्ञान, इंजीनियरिंग, भाषा विज्ञान, कृषि, कानून, प्रबंधन तथा तकनीकी आदि की शिक्षा ग्रहण कर रहे थे।पंडित मदन मोहन मालवीय जी 'बनारस हिंदू विश्वविद्यालय' के कुलपति के रूप में भी सन् 1919 से 1938 तक अपना कार्यभार ग्रहण किया और शिक्षा जगत में अपना अतुलनीय योगदान दिया। मालवीय जी को उनके 153वें में जन्मदिन से एक दिन पहले 24 दिसंबर 2014 को मरणोपरांत भारत के सर्वोच्च नागरिक सम्मान, 'भारत रत्न' से सम्मानित किया जा चुका है।

राष्ट्रके विकास के लिए, वहां के नागरिकों को शिक्षित होना नितांत आवश्यक है। बेहतर शिक्षा उन्नति की ओर ले जाती है। किसी भी राष्ट्र में नवाचार, उच्च आर्थिक विकास, सामानता और सामाजिक न्याय यह मुख्य रूप से राष्ट्र के विकास में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। भारत जैसे विविधता पूर्ण राष्ट्र में शिक्षा की उन्नति और विकास को अग्रसर करना अति आवश्यक है। जो सुविधा संपन्न और वंचित दोनों तरह के बच्चों की आवश्यकताओं को पूरा कर सके। मालवीय जी का विजन जो शिक्षा में समानता और सभी तक शिक्षा की पहुंच को सुनिश्चित करने पर बल दिया है। नई शिक्षा नीति-2020 शिक्षा में सामर्थ्य, गुणवत्ता, पहुंच, समानता और जवाबदेही को सुनिश्चित करती है। जिसमें शिक्षा को प्रत्येक बच्चे तक पहुंचाने के लिए एसडीजी-04(**SDG-04**) में समावेशी शिक्षा की बात कही गई है। (**Mishra,2024**)

- **<u>पंडित मदन मोहन मालवीय जी का शिक्षा दर्शन</u>**- पंडित मदन मोहन मालवीय जी का शिक्षा दर्शन बहुत वृहत दृष्टिकोण को दर्शाता है। मालवीय जी का यह विजन था कि सभी को शिक्षा प्रदान की जाए। उनका ऐसा मानना था कि 'गरीबी' लोगों की अज्ञानता में निहितहै। राष्ट्र के विकास के

लिए सभी क्षेत्रों में आर्थिक विकास की वृद्धि के लिए 'शिक्षा' नितांत आवश्यक है। चाहे वह कृषि, लघु उद्योग, विनिर्माण, विज्ञान एवं वाणिज्य ही क्यों ना हो। मालवीय जी राष्ट्र को प्रमुखता से स्थान देते थे। वह सभी भारतीय विचारों को एक साथ रखकर, सभी को शिक्षा की एक प्रणाली के रूप में देखे थे, जैसे- तकनीकी, वैज्ञानिक और औद्योगिक। पंडित मदन मोहन मालवीय का यह कहना था कि प्राथमिक शिक्षा को सार्वभौमिक रूप से प्रगति की जड़ के रूप में समझा जाए और इसलिए प्राथमिक शिक्षा को अनिवार्य बना दिया गया। मालवीय जी ने नैतिक शिक्षा पर विशेष बल दिया। उनके अनुसार नैतिक शिक्षा, नागरिकों में मूल्यों को विकसित करती है तथा अच्छे एवं जिम्मेदार नागरिक बनाने के लिए आवश्यक है। मालवीय जी का मानना था कि बच्चों को जो शिक्षा प्रदान की जा रही है वह रोचक होनी चाहिए और इसमें धार्मिक ग्रंथो का ज्ञान सम्मिलित होना चाहिए। **(दीक्षित, 2016)**

- **मालवीय जी के अनुसार शिक्षा के उद्देश्य**- पं. मदन मोहन मालवीय का मानना था कि 'शिक्षा' ही समाज के विकास और प्रगति की कुंजी है। इसलिए उन्होंने शिक्षा को 'आकार' (**Shape**) देने के साधन के रूप में देखा। मालवीय जी का शैक्षिक दर्शन पारंपरिक भारतीयता में गहराई से निहित था, जो व्यक्तियों के चरित्र और व्यक्तित्व के साथ-साथ जिम्मेदार नागरिकों का निर्माण करें, जो राष्ट्र में अपना योगदान दे सके। उन्होंने मूल्यों और छात्रों के सर्वांगीण विकास पर विशेष बल दिया। अत: मालवीय जी के अनुसार, शिक्षा के प्रमुख उद्देश्य इस प्रकार है- **(Ahmad, 2023)**

1. **चरित्र निर्माण**- मालवीय जी का कहना था कि शिक्षा का एक प्रमुख उद्देश्य है-चरित्र निर्माण करना। छात्रों में नैतिक मूल्यों को संजोना। उनका मानना था कि शिक्षा को सिर्फ ज्ञान ही नहीं, बल्कि ज्ञान भी देना चाहिए। छात्रों को सत्यनिष्ठा, ईमानदारी और सामाजिक जिम्मेदारी के विषय में भली-भाति ज्ञान होना चाहिए। तभी वह एक सजग नागरिक बन सकता है और राष्ट्र में अपना योगदान दे सकता है।
2. **समग्र विकास**- मालवीय जी छात्रों के सर्वांगीण विकास को प्रमुखता से देखते थे। जैसे- शारीरिक विकास, मानसिक विकास, आध्यात्मिक विकास, भावनात्मक विकास, सामाजिक विकास सहित सर्वांगीण विकास पर विशेष बल दिया।
3. **व्यवहारिक ज्ञान**- मालवीय जी का मानना था कि शिक्षा को केवल सैद्धांतिक ज्ञानपर ध्यान नहीं देना चाहिए, बल्कि व्यावहारिक प्रशिक्षण और कौशल विकास पर ध्यान देना चाहिए। जिससे छात्रों में आत्मनिर्भरता और अर्थव्यवस्था में अपना योगदान करने में सक्षम बन सके।
4. **राष्ट्रवाद**- मालवीय जी कट्टर राष्ट्रवादी थे और उनका मानना था कि शिक्षा से देशभक्ति को बढ़ावा मिलना चाहिए और उनमें राष्ट्रीय चेतना का विकास होना चाहिए। उनका मानना थी कि शिक्षा से नागरिकों में गर्व और प्रेम की भावना उत्पन्न होती चाहिए।
5. **समाज सुधार**- मालवीय जी का मानना था कि शिक्षा समाज सुधार का एक प्रमुख साधन होनी चाहिए। जिससे जातिवाद, सांप्रदायिकता, भेदभाव और सामाजिक बुराइयों को मिटाने के लिए इसका उपयोग किया जा सके।

अत: स्पष्ट है कि मालवीय जी का शिक्षा दर्शन एक ऐसे नागरिकों को तैयार करना चाहता है जो जिम्मेदार एवं सक्षम हो और समाज के विकास में अपना योगदान दे सकें।

- **मालवीय जी के अनुसार शिक्षा का पाठ्यक्रम**- मालवीय जी के अनुसार शिक्षा प्रत्येक व्यक्ति को सुगमता से उपलब्ध होनी चाहिए। चाहे उनकी सामाजिक एवं आर्थिक पृष्ठभूमि कुछ भी हो। उनका कहना था कि- शिक्षा व्यक्तियों में समझ विकसित करने में सहायता करती है, समाज के प्रति जिम्मेदारी की भावना का विकास करती है एवं समुदाय/राष्ट्र के प्रति सेवा की भावना को बढ़ावा देने के लिए प्रेरित करती है। इसी के अनुरूप मालवीय जी ने निम्नलिखित को पाठ्यक्रम में सम्मिलित करने पर बल दिया है, जो इस प्रकार है- (**Ahmad,2023**)

1) **नैतिक एवं नीति परक शिक्षा**-मालवीय जी का मानना था कि पाठ्यक्रम में नैतिक एवं नीतिपरक शिक्षा अवश्य सम्मिलित होनी चाहिए। इसलिए पाठ्यक्रम में ईमानदारी, सत्यनिष्ठा, दूसरों के प्रति सम्मान और सामाजिकता की शिक्षा को सम्मिलित करने पर विशेष बल दिया है।
2) **व्यावहारिक शिक्षा**- मालवीय जी ने व्यावहारिक शिक्षा की आवश्यकता को समझा और इसको पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया। जो छात्रों को वास्तविक दुनिया में सफल होने के लिए आवश्यक है। जिसमें व्यावसायिक प्रशिक्षण, प्रशिक्षुता और इंटर्नशिप आदि सम्मिलित है।
3) **आध्यात्मिक विकास**- मालवीय जी का मानना था कि छात्रों को आध्यात्मिक विकास का पोषण करना चाहिए। जिसको धार्मिक ग्रंथो के अध्ययन, ध्यान, दूसरों की सेवा आदि के माध्यम से प्राप्त किया जा सकता है।
4) **शारीरिक शिक्षा**- मालवीय जी ने शारीरिक शिक्षा एवं खेल के महत्व परविशेष बल दिया।उनका मानना था कि शारीरिक कुशलता जो समग्र कल्याण के लिए आवश्यक है और अनुशासन, टीम भावना के विकास में मदद कर सकती है।
5) **सांस्कृतिक शिक्षा**- मालवीय जी ने सांस्कृतिक शिक्षा को भी पाठ्यक्रम में सम्मिलित करने पर विशेष बल दिया। जिससे सांस्कृतिक शिक्षा को बढ़ावा मिल सके और राष्ट्रीय पहचान एवं गौरव का अनुभव हो सके। इसके अंतर्गत इतिहास, साहित्य और कला का अध्ययन सम्मिलित था।

अतः मालवीय जी के शैक्षिक दर्शन ने शिक्षा के सृजन, उसके प्रसार पर जोर दिया और परिणाम स्वरूप ऐसे व्यक्ति जो जिम्मेदार और दयालु के रूप में समझ में समाज में सकारात्मक योगदान दे सके और परिवर्तन ला सके।

- **मालवीय जी के अनुसार शिक्षण विधि**- मालवीय जी ने विभिन्न शिक्षण विधियों की बात की है, जो इस प्रकार हैं-

1. **गतिविधि आधारित शिक्षा**-मालवीय जी का मानना था कि शिक्षा केवल सैद्धांतिक नहीं, बल्कि व्यावहारिक होनी चाहिए। इसलिए, उन्होंने गतिविधि-आधारित शिक्षा के महत्व पर बल दिया। जिसमें व्यावहारिक गतिविधियां सम्मिलित होती है। जो छात्रों को सीखने की प्रक्रिया में सक्रिय रूप से भाग लेने की अनुमति प्रदान करती है। जिससे वह व्यवहारिक ज्ञान प्राप्त कर सके।
2. **सहकारी शिक्षा**- मालवीय जी का मानना था कि छात्रों के समूह में सीखने के लिए प्रेरित करना चाहिए। उनका मानना था कि सहकारी शिक्षा, छात्रों में महत्वपूर्ण सामाजिक विकास, संचार कौशल एवं सहयोगात्मक रूप से कार्य करने के लिए प्रोत्साहित करती है।
3. **स्व-शिक्षा**- मालवीय जी का मानना था कि विद्यार्थियों को 'स्वयं' से सीखने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। वह शिक्षक पर निर्भरन रहे, बल्कि स्वयं से सीखने के लिए आगे आए। इससे

उनमें आत्मविश्वास उत्पन्न होगा और आगे बढ़ाने में सहायता मिलेगी। अतः वह 'स्वयं' से सीखने की जिम्मेदारी की भावना का अनुभव कर सकेंगे।

4. **वैयक्तीकरण-** मालवीय जी का मानना था कि- शिक्षण प्रत्येक छात्र की व्यक्तिगत आवश्यकताओं के अनुरूप होना चाहिए। उनका मानना था कि शिक्षकों का यह दायित्व है कि वह प्रत्येक छात्र की ताकत एवं कमजोरी से भली-भांति परिचित हो। इसी के अनुरूप ऐसी शिक्षण रणनीतियों का विकास करना चाहिए जो उनकी सीखने की शैली के लिए सबसे उपयुक्त हो।
5. **अनुभवात्मक अधिगम-** मालवीय जी का मानना था कि शिक्षा सिर्फ सैद्धांतिक ज्ञान पर ही आधारित नहीं होनी चाहिए बल्कि छात्रों के अनुभवों पर आधारित होनी चाहिए। उन्होंने छात्रों को व्यावहारिक गतिविधियों में सम्मिलित होने पर विशेष बल दिया। जैसे- किसी भी विषयवस्तु को समझने के लिए, उसकी गहरी समझ हेतु प्रयोग और क्षेत्र यात्राओं का अनुभव।

अत: स्पष्ट है कि मालवीय जी विभिन्न शिक्षण विधियों की बात की है, जो व्यावहारिक, सहयोगात्मक, व्यक्तीकरण, अनुभव अनुभवात्मक शिक्षा पर केंद्रित थी।

- **मालवीय जी के अनुसार शिक्षक की भूमिका-** मालवीय जी ने शिक्षक के बहुआयामी दृष्टिकोण को दर्शाया है, जो इस प्रकार है-

1) **ज्ञान प्रदान करना-** एक शिक्षक की प्राथमिक भूमिका अपने छात्र को ज्ञान एवं कौशल प्रदान करना है। इसमें न केवल अकादमिक ज्ञान, बल्कि व्यावहारिक कौशल एवं जीवन का ज्ञान भी सम्मिलित है। जो छात्रों को वास्तविक दुनिया में सफल बनाने में मदद कर सकते हैं।
2) **जिज्ञासा को प्रोत्साहित करना-** एक अच्छे शिक्षक को, अपने छात्रों को जिज्ञासु होने और प्रश्न पूछने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए। इससे छात्रों में सीखने के प्रति प्रेम और नए विचारों को खोजने की इच्छा विकसित करने में सहायता मिल सकती है।
3) **मूल्यों को स्थापित करना-** मूल्यों को स्थापित करने में शिक्षकों को शिक्षकों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। जो अपने छात्रों में सम्मान, ईमानदारी, सत्यनिष्ठा जैसे मूल्यों का विकास हो सके। समाज में न्याय संगत निर्माण के लिए यह मूल्य अति आवश्यक है।
4) **मार्गदर्शन और सहायता प्रदान करना-** शिक्षकों को, अपने छात्रों को मार्गदर्शन और सहायता प्रदान करनी चाहिए। उन्हें चुनौतियों से उबरने और अपने लक्ष्य हासिल करने में सहायता करनी चाहिए। साथ ही साथ जब छात्र कठिनता का अनुभव करें, तो उन्हें प्रोत्साहित करना चाहिए।
5) **रोलमॉडल-** शिक्षकों को अधिकांशतः उनके छात्र रोल मॉडल के रूप में देखते हैं। अर्थात् शिक्षकों के लिए एक अच्छा उदाहरण स्थापित करना और उन मूल्यों को अपनाना महत्वपूर्ण है जिन्हें वे अपने छात्रों में स्थापित करना चाहते हैं।

अतः मालवीय जी के अनुसार, एक शिक्षक की भूमिका सिर्फ ज्ञान देना नहीं है, बल्कि प्रेरित करना भी है और अपने छात्रों को जिम्मेदार, सर्वगुण संपन्न नागरिक बनाने के लिए मार्ग दर्शन करते हैं, जो समाज में योगदान दे सकते हैं।

- **नई शिक्षा नीति-2020 के संदर्भ में समावेशी शिक्षा-** नई शिक्षा नीति 2020 में समावेशी शिक्षा के संदर्भ में विशेष बल दिया गया है। इसके अंतर्गत 'जीरो रिजेक्शन पॉलिसी' को अपनाया गया

है। जिसमें कोई भी छात्र किसी भी रूप में शिक्षा से वंचित न होने पाए। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का लक्ष्य सभी के लिए समावेशी और समान शिक्षा तक पहुंच सुनिश्चित करना है। चाहे उनकी क्षमताएं, सीखने की शैली या विकलांगता कुछ भी हो। एन०ई०पी-2020 बुनियादी ढांचे के समर्थन के माध्यम से स्कूली शिक्षा प्रणाली में समावेशी शैक्षिक संरचना और समावेशी शैक्षिक संस्कृति को विकसित करने और सभी के लिए सम्मान, सहानुभूति, सहिष्णुता, मानवीय मूल्यों पर सामग्री को सम्मिलित करते हुए पाठ्यक्रम में संबंधित परिवर्तन करने पर जोर देती है।

प्रत्येक विद्यार्थी की उत्कृष्ट क्षमताओं को पहचानने और उन्हें बढ़ावा देने के लिए शिक्षकों और अभिभावकों को संवेदनशील बनाया जाएगा। शिक्षा को समवर्ती सूची का विषय मानते हुए सभी पाठ्यक्रम, शिक्षणशास्त्र और नीतियों में विविधता व स्थानीय संदर्भ के लिए सम्मान। सभी शैक्षणिक निर्णयों में पूर्ण समानता और समावेश पर फोकस ताकि शिक्षा प्रणाली में सभी छात्रों का विकास सुनिश्चित हो। शिक्षा को अनुसूचित जातियों के बच्चों तक पहुंचना, उनकी भागीदारी बढ़ाना और सीखने के अंतराल को कम करना और अन्य पिछड़ा वर्ग पर विशेष ध्यान केंद्रित करना। आदिवासी समुदायों के बच्चों को लाभान्वित करने के लिए विशेष तंत्र की शुरुआत की जाएगी। शैक्षिक रूप से अविकसित समुदायों से संबंधित बच्चों की शिक्षा को बढ़ावा दिया जाएगा। दिव्यांग बच्चों को भी अन्य बच्चों की तरह गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त करने के समान अवसर प्रदान करने हेतु सक्षम तंत्र बनाया जाएगा। शिक्षा को अनुसूचित जातियों के बच्चों तक पहुंचना,उनकी भागीदारी बढ़ाना और सीखने के अंतराल को कम करना और अन्य पिछड़ा वर्ग पर विशेष ध्यान केंद्रित करना। आदिवासी समुदायों के बच्चों को लाभान्वित करने के लिए विशेष तंत्र की शुरुआत की जाएगी। शैक्षिक रूप से अविकसित समुदायों से संबंधित बच्चों की शिक्षा को बढ़ावा दिया जाएगा। दिव्यांग बच्चों को भी अन्य बच्चों की तरह गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त करने के समान अवसर प्रदान करने हेतु सक्षम तंत्र बनाया जाएगा। सामाजिक व आर्थिक तौर पर पिछड़े वर्ग (एस०ई०डी०जी०) के अधिक आबादी वाले क्षेत्रों में विशेष शिक्षा केदो का निर्माण किया जाएगा। बच्चों के शैक्षिक परिदृश्य को बदलने हेतु शिक्षा तंत्र की सभी योजनाओं व नीतियों का पूर्ण प्रयोग किया जाएगा। एस०ई०डी०जी० से संबंधित बच्चों और विशेष रूप से छात्राओं की शिक्षा के प्रति विषमता समाप्त करने हेतु लक्षित नीतियां और योजनाएं तैयार की जाएंगी। सामाजिकव आर्थिक तौर पर पिछड़े वर्ग (एस०ई०डी०जी०) के अधिक आबादी वाले क्षेत्रों में विशेष शिक्षा केन्द्रों का निर्माण किया जाएगा। बच्चों के शैक्षिक परिदृश्य को बदलने हेतु शिक्षा तंत्र की सभी योजनाओं व नीतियों का पूर्ण प्रयोग किया जाएगा। एस०ई०डी०जी० से संबंधित बच्चों और विशेष रूप से छात्राओं की शिक्षा के प्रति विषमता समाप्त करने हेतु लक्षित नीतियां और योजनाएं तैयार की जाएंगी। छात्राओं तथा ट्रांसजेंडर बच्चों की शिक्षा हेतु 'इंक्लूजन निधि फंड' का प्रावधान किया जाएगा। सामाजिक व आर्थिक तौर पर पिछडे वर्ग (एसईडीजी) के बच्चों की समस्याओं के समाधान हेतु समावेशन निधि योजनाओं को विकसित किया जाएगा। स्कूलों में विशेष रूप से एस०ई०डी०जी० वर्ग के विद्यार्थियों के लिए, निशुल्क बोर्डिंग सुविधाओं का निर्माण किया जाएगा। कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालयों का सुदृढ़ीकरण और गुणवत्तापूर्ण स्कूलों में लड़कियों की भागीदारी बढ़ाई जाएगी। (12वीं कक्षा तक) आकांक्षी जिलों, एसईडीजी व अन्य वंचित क्षेत्रों में अधिक जेएनवी और केवी का निर्माण किया जाएगा। उच्चतर शिक्षा ग्रहण करने हेतु एस०ई०डी०जी० वर्ग के मेधावी

छात्रों को वित्तीय सहायता प्रदान की जाएगी। नीतियों और योजनाओं जैसे- लक्षित छात्रवृत्ति, बच्चों को स्कूल भेजने के लिए माता-पिता का प्रोत्साहित करने के लिए सशर्त नकद हस्तांतरण आदि को मजबूत किया जाएगा। एस०ई०डी०जी० से संबंधित बच्चों को छात्रवृत्ति व अन्य अवसरों और योजनाओं के लिए एकल खिड़की प्रणाली अपनाई जाएगी। सभी दिव्यांग है बच्चों के लिए बाधा मुक्त शिक्षा सुनिश्चित करना। सहायक उपकरण,उपयुक्त प्रौद्योगिकी आधारित उपकरण के साथ-साथ पर्याप्त व उप्रयुक्त भाषा में पठन-पाठन सामग्री। दिव्यांग बच्चें नियमित या विशेष स्कूली शिक्षा और गृह आधारित शिक्षा के विकल्प का चयन कर सकते हैं। गंभीर या एक से अधिक विशेष आवश्यकता वाले बच्चेंके पुनर्वास और शिक्षा से सम्बन्धित आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए संसाधन केंद्र और विशेष शिक्षक द्वारा मदद की जाएगी। बी०एड० कार्यक्रमों में शिक्षणशास्त्र में अत्याधुनिक तकनीकों में प्रशिक्षण दिया जाएगा। जिसमें बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान, दिव्यांग बच्चों को पढाना आदि सम्मिलित है। बी०एड० के बाद अल्प अवधि के सर्टिफिकेट कोर्स बहुविषयक कॉलेजों और विश्वविद्यालयों में उपलब्ध कराया जाए।सेवारतशिक्षक शिक्षा कार्यक्रम में दिव्यांग बच्चों को कौशल, लिंग और अल्पसंख्यकों के प्रति संवेदना का ज्ञान शामिल होगा। वैकल्पिक स्कूल के शिक्षकों का क्षमता निर्माण, जिसमें विज्ञान, गणित आदि विषयों सहित नई शैक्षणिक पद्धतियों का ओरिएंटेशन भी शामिल है। एन०सी०एफ०एस०सी० द्वारा निर्धारित विषय और शिक्षण क्षेत्रों को उनके पाठ्यक्रम में एकीकृत किया जाएगा। उच्चतर शिक्षा में बच्चों के नामांकन को बढ़ाया जाएगा, कम प्रतिनिधित्व की समस्या खत्म की जाएगी। पाठ्यक्रम में विज्ञान, गणित, सामाजिक अध्ययन, हिंदी, अंग्रेजी, राज्य भाषाओं या अन्य प्रासंगिक विषयों को समावेश करने के लिए वित्तीय सहायता। पुस्तकों, पत्रिकाओं आदि जैसी पर्याप्त पठन सामग्री और अन्य शिक्षण सामग्री उपलब्ध कराई जाएगी। उच्च गुणवत्ता वाले मॉड्यूल से भारतीय साइन लैंग्वेज सिखाया जाएगा और भारतीय साइन लैंग्वेज के इस्तेमाल से उन बुनियादी विषयों का विकास कर सकेंगे। स्कूल शिक्षा प्रणाली में सभी हितधारको, जिसमें शिक्षक, प्रधानाचार्य, प्रशासक, परामर्शदाता और छात्र शामिल है, को ज्यादा संवेदनशील बनाया जाएगा।सीखने की सामग्री के प्रचार के साथ-साथ माता-पिता के उन्मुखीकरण के लिए टेक आधारित समाधान। स्कूल परिसरों में संसाधनों के साझे उपयोग से दिव्यांग बच्चों और एसईडीजी वर्ग के बच्चों को सहयोग व मदद में सुधार।स्कूलों/ स्कूल परिसरों को दिव्यांग बच्चों के समेकलन विशेष शिक्षकों की भर्ती और संसाधन केदो की स्थापना के लिए संसाधन उपलब्ध कराया जाएगा। दिव्यांग बच्चों को स्कूल परीसरों में आवास की सुविधा प्रदान करने के लिए सहायता प्रदान की जाएगी और इसके लिए एक तंत्र विकसित किया जाएगा।

सतत् विकास के लिए 2030 तक वैश्विक एजेंडा का लक्ष्य 04 (**SDG-04**) भारत द्वारा अपनाया गया। जिसमें 2030 तक सभी के लिए शिक्षा के समान अवसर को प्राप्त करने का लक्ष्य रखा गया है। जिसके अंतर्गत 'समावेशी' और समान गुणवत्ता वाली शिक्षा सुनिश्चित करना और आजीवन सीखने को बढ़ावा देना सम्मिलित है। नई शिक्षा नीति सभी छात्रों को, चाहे उनका निवास स्थान कुछ भी हो, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करती है। ऐतिहासिक रूप से हाशिये पर पड़े, वंचितों और कम प्रतिनिधित्व वाले समूह पर विशेष ध्यान देने पर बल दिया गया है। यह प्रस्तावित करता है कि शिक्षा एक महान स्तर कारक है और इसके

लिए सबसे अच्छा उदाहरण है, जो आर्थिक और सामाजिक गतिशीलता, समावेशन और समानता प्राप्त करने में सहायता प्रदान करता है। नई शिक्षा नीति 2020 मूलभूत सिद्धांतों का सुझाव देती है, जो इस प्रकार है-

I. प्रत्येक छात्र की आदित्य क्षमताओं को पहचानना और बढ़ावा देना।
II. प्रत्येक छात्र के समग्र विकास को बढ़ावा देने के लिए शिक्षकों के साथ-साथ अभिभावकों को भी संवेदनशील बनाना, विशेषकर शैक्षणिक एवं गैर शैक्षणिक दोनों क्षेत्रों में।
III. यह ध्यान रखते हुए की शिक्षा एक समवर्ती विषय है- सभी पाठ्यक्रम, शिक्षाशास्त्र, विविधता के लिए सम्मान और स्थानीय संदर्भ के लिए सम्मान नीति का पालन करना।
IV. यह सुनिश्चित करने के लिए सभी निर्णयों की आधारशिला के रूप में पूर्ण समानता और समावेशन सभी छात्र शिक्षा प्रणाली में आगे बढ़ने में सक्षम है। **(एनईपी, 2020)**

❖ **निष्कर्ष-** अतः उपयुक्त तथ्यों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि 21 वींसदीं में वर्तमान बदल ते परिपेक्ष्य मेंआवश्यकता है निरंतर बदल रही है। इन्हीं बदलते परिवेश, वातावरण के संदर्भ में छात्रों, विशिष्ट बालकों एवं शिक्षकों की आवश्यकताएं एवं भूमिका भी परिवर्तित हो रही है। इन्हीं बदलती आवश्यकताओं के परिणाम स्वरुप समावेशी शिक्षा ने अपना विशेष स्थान रखा है। नई शिक्षा नीति 2020 में भी समावेशी शिक्षा के संदर्भ में बताया गया है। विशेषकर **SDEG**, दिव्यांग छात्रों के लिए विशेष प्रावधान किए गए हैं। जिसमें शिक्षकों की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण है। शिक्षक ही छात्रों की योग्यता, क्षमता का आकलन करने, उनके चहुंमुखी विकास में अपनी विशिष्ट भूमिका निभाता है तथा छात्रों का सर्वांगीण विकास करके उन्हें राष्ट्र में आत्मनिर्भर एवं राष्ट्र में अपने योगदान के लिए सशक्त बनाता है तथा विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास करता है। अतः स्पष्ट है कि समावेशी शिक्षा के परिपेक्ष्य में शिक्षकों की विशेष भूमिका है। अर्थात् मालवीय जी सभी को शिक्षा प्रदान करने में विश्वास करते थे, चाहे उनकी जाति, धर्म, लिंग कुछ भी हो। समावेशी शिक्षा का यह दर्शन आज भी प्रासंगिक है।

- **संदर्भ ग्रंथ सूची-**

- Ahmad, Rahul (2023). Educational Philosophy of Pandit Madan Mohan Malaviya and It's Relevance on Contemporary System of Education. *International Journal for Multidisciplinary Research*.5(2),1-7 Retrieved from https://www.ijfmr.com/papers/2023/2/2080.pdf
- Dixit, Akas (2016). Madan Mohan Malviya and his Contribution and Philosophy.pptx Retrieved from https://www.slideshare.net/slideshow/madan-mohan-malviya-and-his-contribution-and-philosophy-by-ar-akash-dixit/59542126
- Mishra, Anisha (2024). Exploring the Role of National Education Policy 2020 in Promoting Equity in Diversity: Insights from Mahamana's Vision. *International Journal of Novel Research and Development*. 9(1), 1-5 Retrieved from https://www.ijnrd.org/papers/IJNRD2401263.pdf

- भारत सरकार, शिक्षा मंत्रालय, राष्ट्रीय नीति- 2020 **retrieved from** www.Education.gov.in
- Equitable and Inclusion: Learning For All Retrieved from https://www.education.gov.in/shikshakparv/docs/Inclusive_Education.pdf
  https://en.m.wikipedia.org/wiki/Madan_Mohan_Malaviya